भगत सिंह की कलम से

श्री मदन लाल ढींगरा

[नवंबर 1928 की दीवाली के अवसर पर प्रकाशित हुआ 'फांसी अंक' 'चांद' पत्रिका का विशेष अंक था, जो छपते ही ऐतिहासिक दस्तावेज बन गया। इसकी 10,000 प्रतियां प्रकाशित हुई थीं तथा 6-7 दिसंबर को इसके जब्त करने के आदेश जारी होने से पूर्व ही बड़ी संख्या में अनेक स्थानों पर वितरित करने के लिए भेज दिया गया।

चांद के फांसी अंक में शहीदों के बारे में कुल 53 लेख थे। इनमें से 41 भगत सिंह के लिखे हुए समझे जाते हैं, जोकि विभिन्न फर्जी नामों से प्रकाशित हुए थे।]

देश की स्वतंत्रता के लिए संसार के एक कोने में बैठ कर अपने सारे अस्तित्व तथा व्यक्तित्व को छिपा कर प्राण देने वाले इस वीर के बाल्यजीवन की कहानी बहुत कुछ ढूंढ तलाश करने पर भी न मिल सकी। वंश, जन्म तथा निवास स्थान के संबंध में केवल इतना ही नहीं ज्ञात हुआ है कि अमृतसर जिले के किसी पंजाबी खत्री के यहां उनका जन्म हुआ था और बी.ए. पास करने के बाद वे इंगलैंड चले गए थे।

इन दिनों इंगलैंड में सावरकर का बड़ा जोर था। 'इंडिया हाउस' द्वारा जोरों से प्रचार हो रहा था कि कन्हाई लाल और सत्येन्द्र की फांसी के समाचार ने वहां और भी उत्तेजना फैला दी। अस्तु: हमारे नायक भी उक्त हाउस के सदस्य बन गए। एक दिन रात के समय सावरकर जी तथा मदन लाल में न जाने बहुत देर तक क्या बातचीत होती रही। अंत में सावरकर ने उनसे जमीन पर हाथ रखने को कहा। मदन लाल ने दोनों हाथ पृथ्वी पर रखते ही सावरकर ने ऊपर से सुआ मार दिया। सुआ उसे छेदकर पार निकल गया और खून की धार वह चली, किन्तु फिर भी उस वीर की आकृति में अंतर न आया। सावरकर जी ने सुआ दूर फेंक दिया। उस समय दोनों के हृदय प्रेम से गदगद हो उठे। उनकी आंखों से आंसुओं की धारा बह चली। हाथ फैलाने भर की देर थी। दोनों हृदय एक-दूसरे से मिल गए। आंखों से आंसू पोंछते ही सावरकर ने मदन को छाती से लगा लिया।

अगले दिन इंडिया हाउस में (India House) की बैठक में मदन लाल न आए। कुछ लोगों ने उन्हें सर करज़न वायली स्थापित की हुई भारतीय विद्यार्थियों की सभा में जाते देखा था। वायली साहब भारत मंत्री के एडीकांग थे और भारतीय विद्यार्थियों पर खुफिया पुलिस का प्रबंध कर उनकी स्वाधीनता को कुचलने के प्रयत्न में लगे रहते थे। मदन के इस आचरण पर इंडिया हाउस के विद्यार्थियों में आलोचना शुरू हो गई। किन्तु सावरकर के समझाने पर सब लोग चुप हो गए।

सन् 1606 की पहली जुलाई का दिन था। सर करज़न इज़्ीरियल इन्स्टीच्यूट जहांगीर हाल की सभा में किन्हीं दो व्यक्तियों से बातचीत कर रहे थे कि देखते ही देखते मदन लाल ने सामने से आकर उन पर पिस्तौल का फायर कर दिया। सभा में हाहाकार मच गया और मदन लाल पकड़ कर जेल में बंद कर दिए गए। चारों ओर से उन पर गालियों की बौछारें पड़ने लगीं, यहां तक कि स्वयं पिता ने भी सरकार के पास तार भेजा कि मदन लाल मेरा लड़का नहीं है।

जिस समय इंगलैंड में विपिन बाबू के सभापतित्व में उनके कार्य के विरोध में सभा हो रही थी और उन पर घृणा का प्रस्ताव सर्वसज़्मति से पास किया जा रहा था तो सावरकर जी उसका विरोध करने खड़े हो गए। इतने में एक अंग्रेज ने क्रोध में आकर यह कहते हुए कि, Look! how straight the English first goes उनके एक घूंसा मार दिया। पास ही एक भारतीय युवक खड़ा था। उसने यह कह कर कि Look! how straight the Indian club goes उस अंग्रेज के सर पर एक लाठी मार दी। गड़बड़ हो जाने से सभा विसर्जित हो गई और वह प्रस्ताव पास न हो सका।

अदालत में मदन लाल ने सब बातें मानते हुए कहा :-

(I admit other day I attempted to shed the English blood as a humble revenge for the in-human hangings and deportations of the Indian Patriotic youth. And in this I have consulted none but with my own conscience. I have conspired with none but with my own Duty.

I belive that a nation held in bondage with the help of bayonet is in a state of perpetual war. And since the guns were denied me I drew forth my pistol and attacked by surprise.

Being a Hindoo I believe that an insult to my country in an insult to God. For the worship fo my country in the worship of Sri Ram and service of my country is the service of Sri Krishna.

What could a poor son in wealth and intellect like me offer to the...XXX) अर्थात–मैं मानता हूं कि मैंने उस दिन एक अंग्रेज की हत्या की, किन्तु वह उन अमानुपिक दंडों का एक साधारण सा बदला है, जो भारतीय युवकों को फांसी और कालेपानी के रूप में दिए गए हैं। मैंने इस कार्य में अपनी अंतरात्मा के अतिरिक्त और किसी से परामर्श नहीं लिया। एक हिन्दु के नाते मेरा अपना विश्वास है कि मेरे देश के साथ अन्याय करना ईश्वर का अपमान करना है, क्योंकि देश की पूजा श्रीरामचंद्र की पूजा है और देश की सेवा श्रीकृष्ण की सेवा है।

इसके बाद नीरव आकाश की ओर देज़कर उस भक्त पुजारी ने कहा :–

(XXXMother except my own blood.

The only lesson that India requires today is how to die and the only way to teach it is by dying ourselces. And therefore. I die and glory to my Martyrdo.

The battle shall continue till both the Nations, English and Hindus live and their present unnatural relations continue.

My only prayer to God is that may I be return of the same Mother and die for the same cause, till the Mother is freed for the Service of humanity and glory of God. Bandematram.)

अर्थात–मुझ जैसे निर्धन और मूर्ख युवक पुत्र के पास माता की भेंट के लिए अपने रक्त के अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है ? और इसी से मैं अपने रक्त की श्रद्धांजलि माता के चरणों पर चढ़ा रहा हूं।

''भारत में इस समय केवल एक ही शिक्षा की आवश्यकता है और वह है, मरना सीखना और उसके सिखाने का एकमात्र ढंग स्वयं मरना है।''

''मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि मैं बार–बार भारत की ही गोद में जन्म ले उसी के कार्य में प्राण देता रहूं, वंदेमातरम्।''

अंत में आप वीरतापूर्वक फांसी के तज़्ते पर खड़े होकर 'वंदेमातरम्' की ध्वनि के साथ 16 अगस्त, सन् 1606 ई. को अपनी इह–लीला समाप्त कर गए।

– बसन्त